Jabalpur District Part 2

Madhya Pradesh Through District

Pavan Choudhary • Lesson 32 • Feb 16, 2023

Chandra Shah /चंद्र शाह

- After Asaf Khan returned, Dalpati Shah's brother Chandra Shah was accepted as the ruler of the Gadha and he handed over 10 Garh to Akbar of which Raisen, Kuravai, Bhopal, Rahatgarh and Makdai were prominent.
- आसफ खान के वापस लौटने के बाद दलपति शाह के भाई चंद्र शाह को गढ़ा का शासक मान लिया गया और उन्होंने 10 गढ़ अकबर को सौंप दिए जिनमें रायसेन, कुरवाई, भोपाल, राहतगढ़ और मकड़ाई प्रमुख थे|
- **गणेशनृपवर्णनसंग्रहश्लोक** के अनुसार मदनमहल में खडग से हत्या कर दी गयी|

मधुकर शाह

- After Chandra Shah's assassination, his younger son Madhukar Shah became the ruler.
- चंद्र शाह की हत्या के बाद उसका छोटा पुत्र मधुकर शाह शासक हुआ|
- पहला गोंड राजा हुआ जो अकबर के दरबार में प्रस्तुत हुआ
- मधुकर शाह के समय के पीतल के तो चौकोर सिक्के मिलते हैं जिन पर samvat 1664 अंकित है

Prem Shah (Prem Narayan) (1576) / प्रेम शाह (प्रेम नारायण)(१५८६)

- महाराजाधिराज की पदवी धारण की
- Jahangir awarded him the mansab of 1000 and also gave it a big estate.
- इसे जहांगीर ने 1000 का मंसब प्रदान किया और बड़ी जागीर भी प्रदान की|

Pushthi Marg in Gadha

- Sant Chaturbhuj Das of Radhavallabh sect developed Radhavallabh sect in Gadha.
- राधावल्लभ संप्रदाय के संत चतुर्भुज दास ने गढ़ा में राधावल्लभ संप्रदाय का बहुत विकास किया|
- He was born in Gadha, he established a Sanskrit center in Panchamath area of Gadha.
- उनका जन्म गढ़ा में ही हुआ था, गड़ा के **पञ्चमठ** क्षेत्र में उन्होंने संस्कृत का एक केंद्र स्थापित किया|
- During Prem Shah, King Jujhar Singh Bundela of Orchha attacked Gadha and won large estates, but Jujhar Singh had to vacate the area at the behest of the Mughal court.
- प्रेम शाह के समय ओरछा के राजा जुझार सिंह बुंदेला ने गढ़ा पर हमला किया और बड़ी संपत्ति जीती , लेकिन जुझार सिंह को मुगल दरबार के आदेश पर क्षेत्र खाली करना पड़ा|
- There used to be a scholar named Vishnu Dixit in his court./उनके दरबार में **विष्णु दीक्षित** नामक विद्वान हुआ करते

Hriday Shah / हृदय शाह

- He was troubled by the constant invasion of Pahad singh, on the order of Jahngir.
- He settled Ramnagar near Mandla and made it his capital.
- For some time Hridayshah took patronage of Anoop singh (Rewa King)
- At the same time, the **inscription of Ramnagar** (1667) was written.
- उसी समय रामनगर का शिलालेख(1667) लिखा गया होगा|
- Hridayshah married the daughter of **Baghel King Anup Singh of Rewa**, Queen resides in Baghelin Mahal of Ramnagar
- हृदयशाह ने रीवा के बघेल राजा अनूप सिंह की बेटी से की शादी, रानी रामनगर के बघेलिन महल में रहती है
- There is mention of Bhagwat Rai and Gulal, two prominent officers of Hriday Shah, even today the huge ruined palace of Bhagwat Rai is located in Ramnagar.
- हृदय शाह के दो प्रमुख अधिकारी भागवत राय और गुलाल का उल्लेख मिलता है ,आज भी रामनगर में भागवत राय का विशाल खँडहर महल स्थित है|
- He settled Hridaya Nagar near Harkhu Kheda village./हरखू खेड़ा गांव के पास हृदय नगर बसाया|

Hriday Shah / हृदय शाह

- Scholar Bhattu Ji Dixit also lived in his court, Hriday Shah wrote texts called **Hriday Kautuk and Hriday Prakash.**
- इनके दरबार में विद्वान भट्टू जी दीक्षित भी रहते थे, हृदय शाह ने हृदय कौतुक और हृदय प्रकाश नामक ग्रंथ लिखे|
- Settled Pansari (betel growing) from Mahoba. / महोबा से पंसारियो (पान उगाने वाले) को बसाया|
- He died in 1671. /इनकी मृत्यु 1671 में हुई|
- Hriday Shah's successor was **Chhatrashah**, During his time second Guru of Mahaprabhu Prannath settled in Ramnagar.
- Prannath wanted to unite Hindu kings against Aurangzeb.
- Chhatrashah was succeeded by his son Kesri Singh, but he was assassinated by his uncle Hari Singh.
- हृदय शाह का उत्तराधिकारी छत्रशाह हुआ, छत्रशाह के समय प्रणामी संप्रदाय के दूसरे गुरु महाप्रभु प्राणनाथ रामनगर में आकर बस गए|
- रामनगर प्रवास के दौरान महाप्रभु ने जो उपदेश दिए उनका संकलन बाद में **रास** नामक ग्रंथ में किया गया
- वह औरंगजेब के खिलाफ हिंदू राजाओं को इकट्ठा करना चाहते थे| छत्रशाह का उत्तराधिकारी उसका पुत्र केसरी सिंह हुआ, लेकिन उसके चाचा **हरि सिंह** ने उसकी हत्या कर दी।

- हरी सिंह के कुछ समय शासन के बाद उसका पुत्र पहाड़ सिंह शासन करता है|

Narendra Shah

- नरेंद्र शाह, पहाड़ सिंह के पलायन के बाद 1686 के अंतिम महीनों में नरेंद्र शाह राजा बना| इसी समय देवगढ़ में बख्तबुलंद का अधिकार था जो देवगढ़ का सबसे प्रबल शासक था।
- Narendra Shah became king in the last months of 1686 after the exodus of Pahar Singh.
- At this time, Devgarh had the authority of Bakhtabuland, who was the most powerful ruler of Devgarh.
- He was fled to Lanjhi (Balaght) for some time due to fear of Pahar singh

महाराजशाह

- नरेन्द्रशह की मृत्यु के बाद 1731 में उसका पुत्र महाराजशाह सत्तारूढ़ हुआ।
- महराजशाह के समय गढ़ा राज्य पर मराठों के आक्रमण का उल्लेख मिलता है
- 1731 ई. में सतारा दरबार की ओर से रघुजी भोंसला को बरार की चौथ वसूल करने का कार्य सौंपा गया।
- इस तिथि के पश्चात् गढ़ा-मण्डला से बरार का सम्पर्क बढ़ा।
- बाजीराव प्रथम की मृत्यु 28 अप्रैल 1740 ई. को हो गई। उसका उत्तराधिकारी बालाजी पेशवा गढ़ा-मण्डला पर अपना अधिकार स्थापित करने के लिए केवल अवसर की ताक में था।
- कर्नाटक में रघुजी की व्यस्तता का लाभ उठाते हुए बालाजी पेशवा की सेना अपने दावों के पुष्टीकरण हेतु सागर से चलकर मई-जून 1741 ई. में गढ़ा पर अधिकार कर लिया।
- पेशवा के मण्डला आक्रमण के बाद ही 1741 ई. में महाराजशाह की मृत्यु हो गई।

शिवराजशाह

- महाराजशाह की मृत्यु के बाद उसका युवा पुत्र शिवराजशाह 1741 ई. में उसका उत्तराधिकारी हुआ।
- शिवराजशाह के समय 1742 ई. में पेशवा की सेना ने फिर मण्डला के दुर्ग को घेर लिया।
- अक्टूबर, 1742 ई. को दोनों सेनाओं के मध्य युद्ध प्रारम्भ हुआ और पेशवा की सेना ने 18 नवम्बर, 1742 ई. को मण्डला का किला जीत लिया।
- इस युद्ध हुई उसके अनुसार तुरन्त शिवराजशाह को चार लाख रुपया क्षतिपूर्ति के रूप में देना पड़ा।
- शिवराजशाह के समय बीर बाजपेयी ने "सुदामाचरित्र" नामक काव्य की रचना की।

निजामशाह

- दुर्जनशाह की हत्या के पश्चात् शिवराजशाह के भाई निजामशाह ने गद्दी प्राप्त की।
- निजामशाह 1742 ई. के समझौते के अनुसार पेशवा को नियमित रूप से कर देता रहा।
- निजामशाह के समय लक्ष्मीप्रसाद दीक्षित संस्कृत के कवि थे। उन्होंने "गजेन्द्रमोक्ष" नामक ग्रन्थ लिखा

नरहरिशाह

- निजामशाह की मृत्यु के उपरांत उसकी इच्छानुसार उसके पुत्र सुमेरशाह के दावे की उपेक्षा करके निजामशाह के एक दासीपुत्र महीपाल सिंह को गद्दी दी गई।
- महीपालसिंह उस समय शिशु ही था।
- शिवराजशाह की विधवा रानी विलासकुँवरि को यह रुचिकर नहीं लगा। उसने निजामशाह के भाई धनसिंह के 25 वर्षीय पुत्र नरहरिशाह का पक्ष-समर्थन किया।
- महीपालसिंह को सत्ताच्युत करने के लिए उसके समर्थकों को नष्ट कर दिया और निजामशाह के भतीजे नरहरिशाह को गद्दी पर बिठाया।

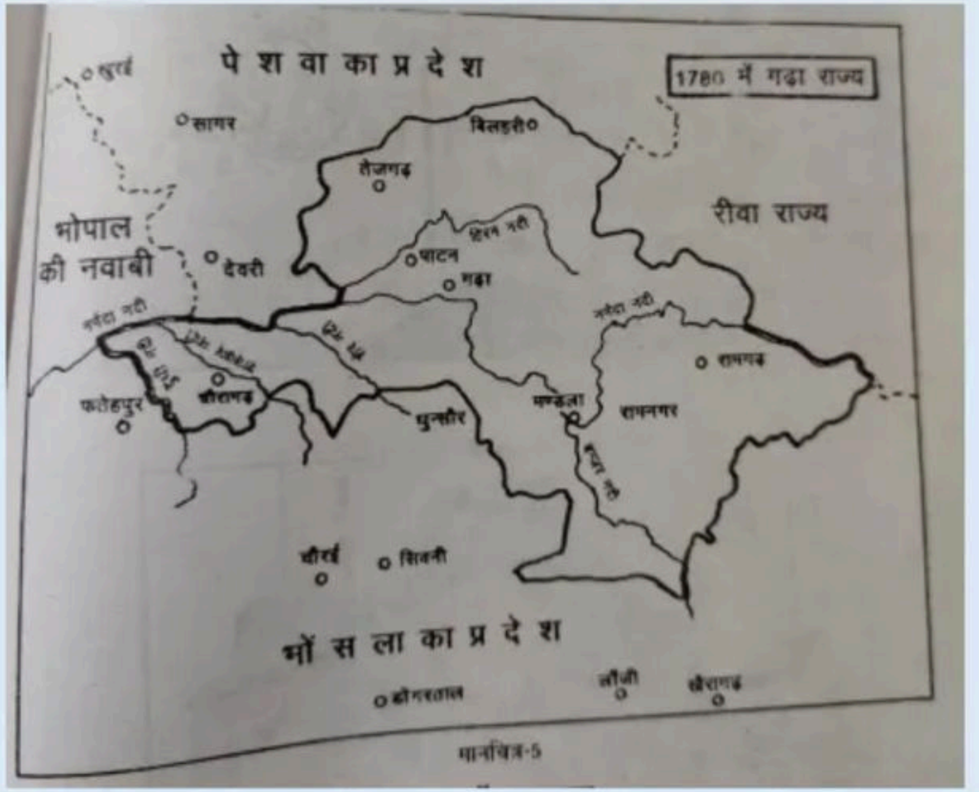

सुमेरशाह

मराठो ने नरहरिशाह को कैद करके सुमेरशाह को सिंहासन पर बैठाया।

नरहरीशाह

- 1782 में सुमेरशाह हो हटाकर पुनः नरहरीशाह को राजा बना दिया गया , लेकिन वास्तविक शक्ति मराठो के हाथ में रही| 1789 में खुरई के किले में इसकी मृत्यु हो गयी
- नरहरीशाह की विधवा लक्ष्मणकुंवारी को मराठो ने पेंशन दी और उनका बेटा नर्मदाबक्श उनके साथ रहा

- 1797 ई. में नर्मदाबक्श कहीं भाग गया और कुछ दिनों के बाद ही भोंसला के शासन के समय उसकी पेंशन कम कर दी गई।
- अंग्रेजी शासन 1818 ई. में प्रारम्भ होने के बाद भी रानी की पेंशन नहीं बढ़ाई गई।
- उधर सुमेरशाह ने 1804 ई. में अपना राज्य पुनः पाने हेतु होल्कर के एक अधिकारी नागोजी की सहायता से प्रयास किया किन्तु उसे असफलता मिली और नागपुर के राजा के प्रोत्साहन से सिंधिया के एक अधिकारी ने उसे मार डाला।
- उसका पुत्र शंकरशाह कुछ समय तो मीर खाँ के साथ रहा। बाद में वह अपने पिता की सागर स्थित जागीर में रहने लगा।
- नर्बदाबख्श जब कई वर्ष तक न आया तो उसे मृत समझकर रानी लक्ष्मणकुँवरि ने शंकरशाह के पुत्र रघुनाथशाह को 1829 ई. में गोद लेकर अपना वारिस बना लिया।
- इसी बीच 1841 ई. में नर्बदाबख्श लौट कर आ गया तो रानी ने उसे स्वीकार कर लिया।
- 1842 ई. में रानी की मृत्यु के बाद रघुनाथशाह और नर्बदाबख्श में रानी की सम्पत्ति को लेकर विवाद उठ खड़ा हुआ।
- निर्णय में जबलपुर के न्यायाधीश कैप्टेन होड ने नर्बदाबख्श को उत्तराधिकारी घोषित किया और जबलपुर के पास के दो गाँव -पुरवा और कौगवाँ उसे मिले।
- जब 1857 ई. का विप्लव हुआ तो अंग्रेजों ने शंकरशाह और रघुनाथशाह के विरुद्ध विद्रोहात्मक कार्यवाहियों का आरोप लगाकर उन्हें जबलपुर में तोप से उड़ा दिया गया।"

HISTORY

- Under the British raj, the name *Jabbalgarh* became *Jubbulpore* and the town was made the capital of the Saugor and Nerbudda territories (part of the north-western provinces governed by the Agra Presidency)

  ब्रिटिश राज के तहत, जबलगढ़ नाम जबुलपोर बन गया और शहर को सागोर और नर्बुदा प्रदेशों की राजधानी बनाया गया (आगरा प्रेसीडेंसी द्वारा शासित उत्तर-पश्चिमी प्रांतों का हिस्सा)

- Jabalpur was known for Thuggee murders, which were combated by William Henry Sleeman

  जबलपुर थुग्गी हत्याओं के लिए जाना जाता था, जो विलियम हेनरी स्लीमैन द्वारा संयोजित किए गए थे

HISTORY

- The 1857 Revolt was started by the Gondwana king, Raje Shankar Shah Madawi and the prince Kunwar Raghunath Shah Madawi

  1857 के विद्रोह की शुरुआत गोंडवाना राजा, राजे शंकर शाह मदावी और राजकुमार कुंवर रघुनाथ शाह मदावी ने की थी

- Both were arrested and imprisoned, and executed on 18 September 1857

  दोनों को गिरफ्तार किया गया और 18 सितंबर 1857 को जेल में डाल दिया गया

- In 1861, the Saugor and Nerbudda Territories became part of the new Central Provinces and in 1903, the Central Provinces and Berar

  1861 में, सौगोर और नेरबुड्डा क्षेत्र नए केंद्रीय प्रांतों का हिस्सा बन गए और 1903 में, केंद्रीय प्रांत और बरार

HISTORY

Jabalpur Jhanda Satyagrah

- In 1922 Meeting of congress committee held in Jabalpur

  1922 में जबलपुर में कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई

- In the meeting Congress men decided to Unfurled Tiranga on Town hall (Gandhi Bhavan now)

  बैठक में कांग्रेस के लोगों ने टाउन हॉल (अब गांधी भवन) में तिरंगा फ़हराने का फैसला किया

- On 18th March 1923 Satyagrahi Unfurled Tiranga on Municiple building but local Dy commissioner removed it and insulted, in opposition **Subhadra kumari Chauhan, Lakshman singh Chauhan marched in the city**

  18 मार्च 1923 को नगर निगम इमारत पर सत्याग्रही ने तिरंगा फ़हराया लेकिन स्थानीय उप आयुक्त ने इसे हटा दिया और अपमान किया, विरोध में सुभद्रा कुमारी चौहान, लक्ष्मण सिंह चौहान ने शहर में मार्च किया

JABALPUR JHANDA SATYAGRAH

- The flag Satyagraha took place in Jabalpur in 1923, with Karnadhar Pandit Sunderlal.
- 1923 में जबलपुर में झंडा सत्याग्रह हुआ जिसके कर्णधार पंडित सुंदरलाल थे
- After the arrest of Gandhiji, the Satyagraha Inquiry Committee was formed which visited the whole of India and presented its report.
- गांधीजी की गिरफ्तारी के बाद सत्याग्रह जांच समिति गठित की गई जिसने पूरे भारत में दौरा कर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की
- In this committee, there were people like Hakim Ajmal Khan (Chairman), Motilal Nehru, C Rajagopalachari, Vitthalbhai Patel
- इस समिति में हकीम अजमल खान(अध्यक्ष),मोतीलाल नेहरू, सी राजगोपालाचारी, विट्ठल भाई पटेल जैसे लोग थे
- Municipal Building Town Hall was selected to honor the members of the inquiry committee and hoist the national flag as per the proposal of Kanchedilal, Chairman of Jabalpur Municipality
- जबलपुर नगर पालिका के अध्यक्ष कनछेदीलाल के प्रस्ताव अनुसार जांच समिति के सदस्यों को सम्मान देने और राष्ट्रीय झंडा फहराने के लिए नगर पालिका भवन टाउन हॉल का चयन किया गया

- But the program was not allowed by the Deputy Commissioner/लेकिन डिप्टी कमिश्नर द्वारा कार्यक्रम की इजाजत नहीं दी गई
- The same day a huge public meeting was organized at Tilak Maidan in which C. Rajagopalachari and Dr. Rajendra Prasad called upon the citizens of Jabalpur to come forward to uphold the national flag.
- उसी दिन शाम को तिलक मैदान में विशाल सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया जिसमें सी राजगोपालाचारी और डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद ने जबलपुर के नागरिकों को राष्ट्रीय झंडे का सम्मान बनाए रखने के लिए आगे आने का आह्वान किया
- Pandit Sundarlal announces Satyagraha to honor the flag
- पंडित सुंदरलाल ने झंडे के सम्मान के लिए सत्याग्रह करने की घोषणा की
- On March 18, a procession was taken out under the leadership of Sundarlal, in which Subhadra Kumari Chauhan, Nathuram Modi, Badri Prasad Dubey, Devi Singh Jat, Pyarelal, Gopal Maharaj, Chidambaram Pillai etc.

- 18 मार्च को सुंदरलाल के नेतृत्व में जुलूस निकाला गया जिसमें सुभद्रा कुमारी चौहान, नाथूराम मोदी, बद्री प्रसाद दुबे, देवी सिंह जाट, प्यारेलाल, गोपाल महाराज, चिदंबरम पिल्लई आदि थे
- On reaching the town hall, Damoh's young man Premchand Jain waved the flag but the soldiers took him off and crushed him
- टाउन हॉल पर पहुंचकर दमोह के नवयुवक प्रेमचंद जैन ने झंडा लहराया लेकिन सिपाहियों ने उसे उतारकर पैरों से कुचल दिया

HISTORY

- During Civil disobedient Movement Seth Govind Das and Dwarka Prashad Mishra organise Salt Movement in Jabalpur

  सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान सेठ गोविंद दास और द्वारका प्रसाद मिश्र जबलपुर में नमक आंदोलन का आयोजन करते हैं

- In 1933 Mahatma Gandhi stayed in Jabalpur for a long time
- In 1939, the Tripuri Indian National Congress session was chaired by Subhas Chandra Bose, held at Tilwara Ghat, near Jubbulpore

  1939 में, त्रिपुरी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता सुभाष चंद्र बोस ने की, जो तिलवारा घाट में, जम्बुलपोर के पास आयोजित किया गया था

- On 12 February 1948, the urn containing his ashes was immersed in the Narmada River at Tilwara Ghat by Ravishankar Shukla

  12 फरवरी 1948 को रविशंकर शुक्ल द्वारा तिलवाड़ा घाट पर नर्मदा नदी में उनकी राख से भरा हुआ कलश विसर्जित किया गया

HISTORY

- In 1950, the Central Provinces and Berar became the state of Madhya Pradesh, and Shukla became the first chief minister of the Congress-led government
- 1950 में, मध्य प्रांत और बरार मध्य प्रदेश राज्य बन गए, और शुक्ला कांग्रेस के नेतृत्व वाली सरकार के पहले मुख्यमंत्री बने

Mutiny in Jabalpur / जबलपुर में विद्रोह

- Successor of Gadha kingdom Shankar Shah(70 years) and Raghunath Shah (40 years) resides in **Purva fort of Jabalpur**
- गढ़ा राज्य के उत्तराधिकारी शंकर शाह (70 वर्ष) और रघुनाथ शाह (40 वर्ष) जबलपुर के पुरवा किले में रहते हैं
- In Jabalpur, on 16 June 1857 one Indian Sepoyee attacked a British officer.
- जबलपुर में, 16 जून 1857 को एक भारतीय सिपाही ने एक ब्रिटिश अधिकारी पर हमला किया।
- Shahnkar shah and Raghunath Shah with the help of Indian officers of 52nd Regiment planned to revolt.
- 52 वीं रेजिमेंट के भारतीय अधिकारियों की मदद से शाहनकर शाह और रघुनाथ शाह ने विद्रोह करने की योजना बनाई।
- But British easily tract their activities and arrested them.
- लेकिन ब्रिटिशों ने उनकी गतिविधियों को आसानी से ट्रैक किया और उन्हें गिरफ्तार कर लिया।
- After arrest 52nd Regiment planned to released them but British Killed both of them by tied on Cannon.
- गिरफ्तारी के बाद 52 वीं रेजिमेंट ने उन्हें रिहा करने की योजना बनाई लेकिन ब्रिटिश ने दोनों को तोप से बांधकर मार डाला।

Mutiny in Jabalpur / जबलपुर में विद्रोह

- After blowing Shankar Shah with a cannon, his wife Rani Phool Kunwar fled and came to Mandla and raised the army and rebelled against the British.
- शंकर शाह को तोप से उड़ाने के बाद उनकी पत्नी रानी फूल कुंवर भागकर मंडला आ गई और सेना खड़ी कर अंग्रेजों से विद्रोह किया|

The freedom movement in Jabalpur

- The **first** Congress Zilla Parishad was formed in **Jabalpur** under the chairmanship of **Madan Mohan Malviya.**
- Its executive committee consisted of Seth Ballabhdas, Shivprasad Verma, Shyamsunder Bhargava, Vyohar Raghuveer Singh and Govindlal Purohit.
- Jabalpur's "**Jabalpur Times**" propagated Congress and nationalism.
- Tilak addressed a public meeting in 1916 at **Kaif Khan ki Talaiya**.
- **Tilak** arrived in **Jabalpur** on 7 October 1917 and again on 3 and 4 June 1920.
- In 1913, **'Swarajya Sangh'** was established in **Jabalpur** and by that time, the basic mantras like Satyagraha, non-cooperation movement etc. had been propagated in the cities and villages.
- Among them was **Shri Shailendra Ghosh of Jabalpur**, who was arrested on 16 December 1916.
- During the Swadeshi movement, the Swadeshi movement started in **Jabalpur** to remove poverty, **Shri Kailashchandra Dutt** opened a **Swadeshi Store in Jabalpur.**

The freedom movement in Jabalpur

At a special session in Kolkata in September 1920, Gandhiji proposed a non-cooperation movement

- सितंबर 1920 में कोलकाता के अधिक विशेष अधिवेशन में गांधी जी ने असहयोग का प्रस्ताव प्रस्तुत किया।
- Pandit Vishnu Dutt Shukla, Surendra Lal Tapasvi, Makhanlal Chaturvedi, Thakur Laxman Singh, Chauhan Subhadra Kumari Chauhan, Govindas Pandit, Dwarka Prasad Mishra etc. participated from Jabalpur.
- जबलपुर से अधिवेशन में पंडित विष्णु दत्त शुक्ला ,सुरेंद्र लाल तपस्वी, माखनलाल चतुर्वेदी, ठाकुर लक्ष्मण सिंह, चौहान सुभद्रा कुमारी चौहान, गोविंदास पंडित ,द्वारका प्रसाद मिश्रा आदि शामिल हुए।
- Mahatma Gandhi came to Chhindwara in 1921 and visited Jabalpur

5 March 1921/1921 में महात्मा गांधी छिंदवाड़ा आये और यहां से 5 मार्च 1921 को जबलपुर का दौरा किया।

- The Kasturba Gandhi and Ali brothers accompanied him.
- उनके साथ कस्तूरबा गांधी और अली बंधु भी थे| जबलपुर के गोल बाजार मे गांधी जी का भाषण हुआ,जिसे सुनने हजारों लोग एकत्रित हुए।
- Thousands of people gathered to hear Gandhiji's speech at Gol Bazaar in Jabalpur
- The boycott of foreign goods started in Mahakaushal and people left government school and started studying in national school.
- महाकौशल में विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार शुरू हुआ और लोगों ने सरकारी स्कूल छोड़कर राष्ट्रीय स्कूल में पढ़ना शुरू किया।

The freedom movement in Jabalpur

- At the same time 'Hitkarini National School' was established in Jabalpur.
- Tilak National School was established in Katni.
- इसी समय जबलपुर में 'हितकारिणी राष्ट्रीय शाला' स्थापित हुई। कटनी में तिलक राष्ट्रीय स्कूल स्थापित किया गया।
- 35 lawyers of Mahakaushal left the advocacy of which Nathuram Modi, Gyan Chand Verma, Thakur Laxman Singh Chauhan, Shiv Prasad Verma were important
- महाकौशल के 35 वकीलों ने वकालत छोड़ दी जिनमें नाथूराम मोदी, ज्ञान चंद वर्मा ,ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान, शिव प्रसाद वर्मा प्रमुख थे।
- In 1920 **Ratauna Satyagaraha** launched against govt. Butchery.

Civil Disobedience Movement in Jabalpur

- मध्य प्रांतीय समिति के अध्यक्ष सेठ गोविंद दास तथा मंत्री द्वारका प्रसाद मिश्र थे| उन्होंने खारे पानी को उबालकर नमक बनाया जो अत्यंत खर्चीला था

  6 अप्रैल 1930 को जबलपुर में कमानिया गेट से रानी दुर्गावती की ऐतिहासिक समाधि तक मध्य प्रांतीय युद्ध समिति के अध्यक्ष सेठ गोविंद दास तथा मंत्री द्वारका प्रसाद मिश्र के नेतृत्व में एक जुलूस निकाला गया

- Excerpts from the book 'Raj in English' written by the ascetic Sunderlal were read at the meeting place. Which the British government confiscated

- सभा स्थल पर तपस्वी सुंदरलाल की लिखी 'भारत में अंग्रेजी' राज नामक पुस्तक के अंश पढ़कर सुनाए गए| जिसे अंग्रेज सरकार ने जप्त कर लिया|

- The publication of **Kaushal Samachar** of Jabalpur ceased and the Lokmat letter was punished for not making declarations under the Act. A branch of the **Naujawan Bharat Sabha** was also opened in Jabalpur.

- जबलपुर के **कौशल समाचार** का प्रकाशन बंद हो गया और लोकमत पत्र को अधिनियम के अधीन घोषणा न करने पर दंडित किया गया। जबलपुर में **नौजवान भारत सभा** की एक शाखा भी खोली गयी|

- सिरोहा, कटनी, मंडला, दमोह तथा रायपुर नमक कानून तोड़कर प्रांत में आंदोलन को गति प्रदान की गई

- जबलपुर के अनेक व्यक्तियों में भवानी प्रसाद तिवारी, सवाई मल जैन, सत्येंद्र प्रसाद मिश्र, हरदा के महेश दत्त मिश्र ने भाग लिया
- 15 अप्रैल 1930 को रायपुर मध्य प्रांतीय राजनीतिक परिषद की बैठक में द्वारका प्रसाद मिश्र के प्रस्ताव अनुसार हिंदी मध्य प्रांत का नाम बदलकर महाकौशल कर दिया गया
- कांग्रेस नेताओं ने प्रतिबंधित साहित्य पढ़कर अपनी गिरफ्तारी देने की कोशिश की| रायपुर के तरुण सत्याग्रही द्वारा तरुण संघ रविशंकर के नेतृत्व में स्थापित किया गया|
- एक तरुण सभा जबलपुर में सेठ गोविंद दास तथा द्वारका प्रसाद मिश्र के द्वारा स्थापित की गई मिश्र जी ने **हिंदुस्तानी सेवा दल** का गठन कर उसकी शाखाएं प्रांत के विभिन्न प्रांतों में स्थापित की
- जबलपुर में महिला कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा महिला समाज की स्थापना जबलपुर में की गई

Individual Satyagraha in Jabalpur

- The first Satyagrahi of Jabalpur was **Babu Govindadas** in personal Satyagraha, he started Satyagraha from Mangela village.
- व्यक्तिगत सत्याग्रह में जबलपुर के प्रथम सत्याग्रही बाबू गोविंददास हुए, उन्होंने मंगेला ग्राम से सत्याग्रह शुरू किया|

TOURISM

Bhedaghat

- Bhedaghat is town near Jabalpur where famous sites Dhuandhar Falls, Marble Rocks, and the Chaunsath Yogini temple located
- भेड़ाघाट जबलपुर के पास का शहर है जहाँ प्रसिद्ध स्थल धुंआधार जलप्रपात, संगमरमर की चट्टानें और चौंसठ योगिनी मंदिर स्थित हैं
- Its major attraction is a waterfall known as Dhuandhar, which looks like smoke coming out of the river and therefore it got its name as "Dhuan(smoke)-dhar(flow of water)"

Dhuandhar Falls

- The word derived from two Hindi words - Dhuan (smoke) + Dhar (flow)

  यह शब्द दो हिंदी शब्दों से लिया गया है - धुआन (धुआँ) + धार (प्रवाह)

- Located on Narmada River in Bhedaghat and are 30 meters high

  भेड़ाघाट में नर्मदा नदी पर स्थित है और 30 मीटर ऊंची है

- The best time to visit Dhuandhar falls is during in Sharad Purnima, when Narmada Mahotsava get celebrated

  धूंधर पड़ने का सबसे अच्छा समय शरद पूर्णिमा के दौरान होता है, जब नर्मदा महोत्सव मनाया जाता है

Marble Rocks

- The river has carved the soft marble, creating a beautiful gorge of about 8 km in length

  नदी ने नरम संगमरमर को उकेरा है, जिससे लंबाई में लगभग 8 किमी का सुंदर घाट बन गया है

- Earlier, the Gorge was narrow in size and hence, monkeys could cross over from one side to another

  इससे पहले, गॉर्ज आकार में संकीर्ण था और इसलिए, बंदर एक तरफ से दूसरे तक पार कर सकते थे।

- This gave the Gorge its local name- **Bandar Kudni**

  इसने कण्ठ को अपना स्थानीय नाम दिया- बंदर कुड़न

- The white marbles are predominantly rich in Magnesium and are closer in hardness to soap stone

  सफेद पत्थर मैग्नीशियम में मुख्य रूप से समृद्ध होते हैं और साबुन के पत्थर के लिए कठोरता के करीब होते हैं

Marble Rocks

- This softness allows them to be carved.

  यह कोमलता उन्हें नक्काशी करने की अनुमति देती है।

- The area also contains blue and brown colored marble

  इस क्षेत्र में नीले और भूरे रंग के संगमरमर भी हैं।

स्थापत्य एवं मूर्तिकला

Bhedaghat (Jabalpur): Chausath Yogini Temple

- Based on the style of writings on the Yogini statues kept in the temple, they are believed to have been originally constructed in the latter half of the 10th century AD.
- Its ancient wall and recorded sculptures were composed around the middle of the 10th century AD, and Queen Alhandevi built the upper part of the wall and the roof and pillars in the twelfth century AD.
- The circular Chausath Yogini Temple with an open roof has an inner diameter of 116 feet 2 inches and an outer diameter of 130 feet 9 inches.
- In the sanctum sanctorum of the Gaurishankar temple, there is a statue of **Uma-Maheshwar** mounted on the Nandi.

स्थापत्य एवं मूर्तिकला

भेड़ाघाट (जबलपुर): चौसठ योगिनी मंदिर

- मन्दिर में रखी योगिनी प्रतिमाओं पर अंकित लेखों की शैली के आधार पर इनका निर्माण मूलतः ई. 10वीं शती के उत्तरार्द्ध में हुआ माना गया है|
- इसकी प्राचीन दीवार और अभिलिखित मूर्तियों की रचना ई. 10वीं शती के मध्य के आसपास हुई और दीवार के ऊपरी भाग एवं छत तथा स्तम्भों का निर्माण रानी अल्हणदेवी ने ई. बारहवीं शताब्दी में करवाया जब उसने वृत्ताकार घेरे के मध्य में स्थित गौरीशंकर का मन्दिर निर्माण करवाया।
- खुली छत का वृत्ताकार चौंसठ योगिनी मन्दिर का भीतरी व्यास 116 फीट 2 इंच और बाहरी व्यास 130 फीट 9 इंच है।
- गौरीशंकर मन्दिर के गर्भगृह में नन्दी पर आरूढ़ उमा-महेश्वर की प्रतिमा है।

Chausath Yogini Temple

- The complex of the temple consists of 95 shrines which includes 64 Yoginis in circular fashion around the temple, one for each yoginis and a main shrine where Lord Shiva and his consort Goddess Parvati are seen riding on Nandi, the sacred bull

मंदिर के परिसर में 95 मंदिर हैं, जिसमें मंदिर के चारों ओर गोलाकार रूप में 64 योगिनी शामिल हैं, प्रत्येक योगिनी के लिए एक और एक मुख्य मंदिर है जहाँ भगवान शिव और उनकी पत्नी देवी पार्वती नंदी, पवित्र बैल पर सवारी करते हुए दिखाई देते हैं

Hanumantal Bada Jain Mandir

- **Bara Mandir** (हनुमान-ताल मन्दिर) is a historic Jain temple in Jabalpur.
- The temple appears like a fortress with numerous shikharas

  जबलपुर में बारा मंदिर (हनुमान-ताल मन्दिर) एक ऐतिहासिक जैन मंदिर है मंदिर कई शिखरों के साथ एक किले की तरह दिखाई देता है
- Originally built in 1686 CE, it was renovated in the 19th century
- Bhattarak Harichandrabhushan of Sonagiri, belonging to the Balatkara Gana division of Mula Sangha conducted pratishas in 1834, 1839, and 1840
- Temple has 22 shrines (vedis)
- The main room with glasswork was built in 1886 by Bholanath Singhai

  ग्लासवर्क के साथ मुख्य कमरा 1886 में भोलानाथ सिंघई द्वारा बनाया गया था

- This room contains the only image of the Jain Goddess, Padmavati, that is still worshipped in central India

  इस कमरे में जैन देवी, पद्मावती की एकमात्र छवि है, जो अभी भी मध्य भारत में पूजी जाती है

Madan Mahal

- Madan Mahal fort was built on 11th century by 38th Gond (Tribe) ruler, Raja Madan Shah
- It was basically used as Gond military post to keep eye on nearby areas and check any military expedition toward their region.
- इसका उपयोग मूल रूप से गोंड सैन्य पोस्ट के रूप में किया जाता था ताकि आस-पास के क्षेत्रों पर नज़र रखी जा सके और अपने क्षेत्र की ओर किसी भी सैन्य अभियान की जाँच की जा सके।

Rani Durgavati Memorial and Museum

- Dedicated to the memory of the great Queen Durgavati in her memory.
- A museum is fine collection of sculptures, inscriptions and prehistoric relics
- उनकी स्मृति में महान रानी दुर्गावती की स्मृति को समर्पित।
- एक संग्रहालय मूर्तियों, शिलालेखों और प्रागैतिहासिक अवशेषों का अच्छा संग्रह है
- built in 1964
- There are total 6163 antiquities in the museum
- These are Shaiva gallery, Vaishnava Gallery, Jaina Gallery, Index Gallery, Excavation gallery, Inscription gallery, Coin gallery, and Tribal art gallery

Pisanhari Ki Madiya

- Jain Pilgrimage Place
- Built by poor women name Pisanhari
- Located at Tilwara ghat

Dumna Nature Reserve Park

- **Dumna Nature Reserve Park** is an ecotourism site
- It includes a dam, forests, and wildlife in a 1058 hectare area

Khandari Dam

- Khandari Dam is a spill-type dam constructed by J.H. Morris, Chief Commissioner of Central Provinces and Berar Construction was completed on 26 February 1883, to supply water to Jabalpur City.
- The dam's capacity is 6.30 Million cubic metres
- Fauna- chital, wild boar, porcupine, jackals,

Bargi Dam

- **Bargi Dam** is one of the first completed dams out of the chain of 30 major dams to be constructed on Narmada River.
- बरगी बांध नर्मदा नदी पर बनने वाले 30 प्रमुख बांधों की श्रृंखला में से पहले पूर्ण किए गए बांधों में से एक है
- Two major irrigation projects, named Bargi Diversion Project and Rani Avantibai Lodhi Sagar Project, have been developed by Bargi Dam

  बरगी डैम द्वारा बरगी मोड़ परियोजना और रानी अवंतीबाई लोधी सागर परियोजना के नाम से दो प्रमुख सिंचाई परियोजनाएँ विकसित की गई हैं।
- Bargi dam construction started in year 1974 and completed in year 1990
- Main dam is constructed near Bargi village
- Height-69 Metre
- Length - 5.4kms.

Temple of Tripur Sundari Devi

- Located at Tevar
- Tripur Sundari Temple s statue of devi (goddess) that emerge from ground.
- Tripur Sundari Devi is sacred for **Kalchuri dynasty** and was a place of worship since 11th century.
- Tripura literally means three cities and sundari means beautiful ladies; hence, the popular inference that is accepted as the meaning of the temple is beautiful goddess of the three cities

Samadhi of Rani Durgavati Barela

- Rani Durgavati was died near village Barela while fighting with commander of Mughal Asaf Khan
- मुगल आसफ खान के सेनापति से लड़ते समय रानी दुर्गावती की मृत्यु गाँव बरेला के पास हुई थी
- She was killed herself while she found that Mughal army came near her
  वह खुद मारा गया था जब उसने पाया कि मुगल सेना उसके पास आई थी

Kachnar City Shiv Temple

- Kachnar City is famous for Shiva idol which is 76 ft.
- Its located in Vijayanagar, a newly developed locality of Jabalpur.

ECONOMY

Gun Carriage Factory Jabalpur

- The Gun Carriage Factory was started in the year 1904 by the British in India
  गन कैरिज फैक्ट्री की शुरुआत भारत में अंग्रेजों ने 1904 में की थी
- this is one of the 40 odd defense manufacturing units governed by the Indian Ordinance Factory Board
  यह भारतीय अध्यादेश फैक्टरी बोर्ड द्वारा शासित 40 विषम रक्षा विनिर्माण इकाइयों में से एक है
- Manufactured wapons for Armed forces and 3 forces of India
  भारत के सशस्त्र बलों और 3 बलों के लिए वैपन्स निर्मित किये
- Manufactured 12 Bore Pump action Gun, Large Callibre Gun, Kavach mod-II Rocket Launcher
  12 बोर पंप एक्शन गन, बड़े कैलिब्रे गन, कवच मॉड- II रॉकेट लॉन्चर निर्मित किये

ECONOMY

Grey Iron Foundry

- The factory is specialized in the production of Automobile Casti
  S.G.Iron, Cast Iron & Medium Carbon Steel

  कारखाना ग्रे आयरन, एस.जी.इरोन, कास्ट आयरन एंड मीडियम कार्बन स्टील के
  उत्पादन में विशिष्ट है

- Established with the help of Czechoslovakia in 1972
- Hardwares like Hand Grenade, Lifting Plug, Flare Trip Wire, 100-120 Kg Aerial Bomb and Other Defence Castings

ECONOMY

Army Vehicle Factory

- Vehicle Factory, Jabalpur established in 1969 is a dedicated manufacturing unit to meet 'Transport Needs' of the Armed Forces

  1969 में स्थापित वाहन फैक्ट्री, जबलपुर सशस्त्र बलों की 'ट्रांसपोर्ट नीड्स' को पूरा करने के लिए एक समर्पित विनिर्माण इकाई है

- Manufacturing facilities include State-of-the-Art CNC machines and SPMs for manufacturing Transmission Components, Fabricated Items, Chassis Frame & Body

- विनिर्माण सुविधाओं में ट्रांसमिशन घटकों, फैब्रिकेटेड आइटम, चेसिस फ्रेम और बॉडी के निर्माण के लिए अत्याधुनिक सीएनसी मशीनें और एसपीएम शामिल हैं।

Narmada Giletines Limited

- Narmada Gelatines Ltd. (Erstwhile Shaw Wallace Gelatines Ltd) was set up in 1961

  नर्मदा जिलेटिन लिमिटेड (अर्स्टवर्ड शॉ वालेस जिलेटिन लिमिटेड) की स्थापना 1961 में हुई थी

- Pioneered the manufacture of ossein and gelatin in India

  भारत में ओसिन और जिलेटिन के निर्माण का संचालन शुरू किया

- Only Railway Zone of Madhya Pradesh
- State Beedi Industry

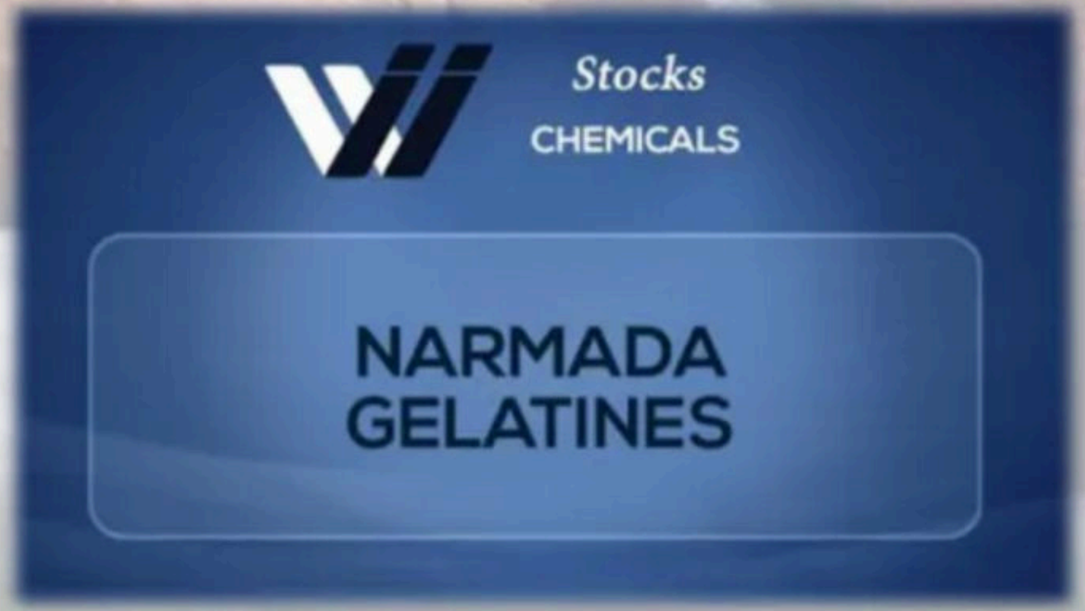

Brief history of the High court building at Jabalpur

- Constructed in 1899 by Raja Gokul Das, Father of late Seth Govind Das, Former Member of Parliament
- The building was designed by Henry Irwin, C.I.E., P.W.D., sometime in 1886.
- The construction work of this building commenced in 1886 and was completed in 1889 at the cost of about Rupees Three Lacs.
- Seth Govind das transferred property on lease of 1rs Per year.
- Before formation of the new State of Madhya Pradesh the building housed the Collector's Office, Law Courts and Treasury.
- In 1956 building was approved by late Hon'ble Shri Justice M. Hidayatullah as a high court Building

Brief history of the High court building at Jabalpur

- 1899 में राजा गोकुल दास, स्वर्गीय सेठ गोविंद दास के पिता, पूर्व सांसद द्वारा निर्मित
- इमारत को हेनरी इरविन, C.I.E., P.W.D. द्वारा 1886 में कभी डिजाइन किया गया था।
- इस भवन का निर्माण कार्य 1886 में शुरू हुआ और 1889 में लगभग तीन लाख रुपये की लागत से पूरा हुआ।
- सेठ गोविंद दास ने 1rs प्रति वर्ष के पट्टे पर संपत्ति हस्तांतरित की।
- मध्य प्रदेश के नए राज्य के गठन से पहले भवन में कलेक्टर कार्यालय, कानून न्यायालय और कोषागार थे।
- 1956 में स्वर्गीय माननीय श्री न्यायमूर्ति एम. हिदायतुल्ला द्वारा भवन को उच्च न्यायालय भवन के रूप में अनुमोदित किया गया था

Jabalpur Nagar Nigam

- Considered to be First Nagar Palika of MP
- Jabalpur Municipal Corporation was established as **Jabalpur Municipal Committee** under **Lucknow Nagar Palika Act of 1864** under which Dy. Commissioner was named as Chairman of Municipality. **W.H.Newhard**

  became the first person to hold that post
- जबलपुर नगर निगम 1864 के लखनऊ नगर पालिका अधिनियम के तहत जबलपुर नगर समिति के रूप में स्थापित किया गया था। आयुक्त को नगर पालिका के अध्यक्ष के रूप में नामित किया गया था। W.H.Newhard उस पद को धारण करने वाले पहले व्यक्ति बने
- In the year 1935 the state government took over the total administration of the Municipal Committee, and **Murli Manohar Seth** was appointed as its Administrator.
- वर्ष 1935 में राज्य सरकार ने नगरपालिका समिति का कुल प्रशासन संभाला और मुरली मनोहर सेठ को इसका प्रशासक नियुक्त किया गया।

CULTURE & PERSONALITIES

- Called Sanskar Dhani by Vinayak Narhari Bhave
- **Rani Durgavati**

  Jaya Bachchan
- Famous film actress born in Jabalpur in 1948

  Arjun Rampal
- Famous film actor Arjun Rampal born in Jabalpur
- Debue from *Pyaar Ishq Aur Mohabbat* (2001)

CULTURE & PERSONALITIES

- **Raghuvir Yadav** is an Indian film, stage and television actor, music composer, singer and set designer. He made his film debut with *Massey Sahib* (1985)

Subhadra Kumari Chauhan

- She was married to Thakur Lakshman Singh Chauhan and settle in Jabalpur
- Indian poet famous for Hindi poems composed primarily in Veer Ras, One of her most popular poems is Jhansi ki rani
- On August 6, 1976, India Posts released a postage stamp to commemorate her

Kamata Prashad Guru

- Expert on grammar of Hindi language.
- He was the author of the book *Hindi vyakarana*.
- He was died in Jabalpur
- The Government of India issued a commemorative stamp in his honour in 1977.

Osho (Acharya Rajneesh)

- He was born in Narsinghpur
- Studied his school and College in Jabalpur

Hari shankar Parsai

- Famous poet born in Itarsi and died in Jabalpur
- Published magezine Vasudha From Jabalpur.
- Work- Bhoot Ke Paon Peeche (भूत के पाँव पीछे), Shikayat Mujhe bhi hai (शिकायत मुझे भी है), Vasudha (magazine), Premchand Ke Phaté Jootey (प्रेमचंद के फटे जूते), Jaisé Unké Din Firé (जैसे उनके दिन फिरे)

G. D. Bakshi

- **Major General Gagandeep Bakshi is** born 1950 in Jabalpur
- He is a retired Indian army officer
- Now TV Debator

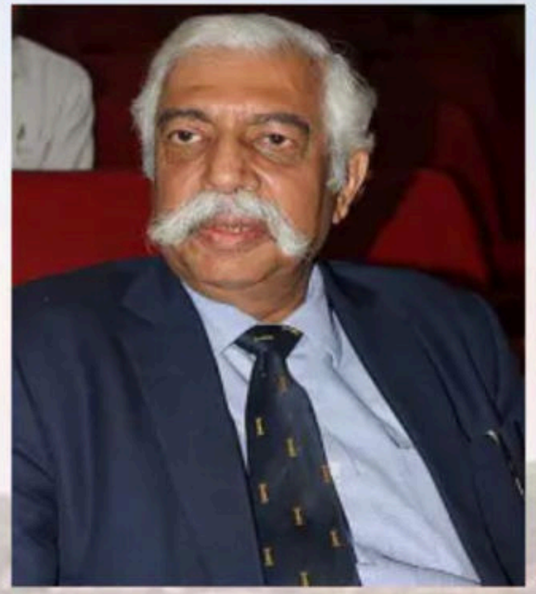

Rakesh Singh

- MP From Jabalpur

Rishabh Tiwari

- **Famous Cricketer**

Keshav Prasad Pathak

- Born in Jabalpur 1916
- Translating Rubaiyo to the famous poet Omar Khayyam of Iran

Narmada Prasad Khare

- Born 1913, Jabalpur, the first poem published in 1930 in Saraswati, Swara Pathai and Niranjan

GEOGRAPHY

- Part of Narmada Son Valley

- Rainfall- 100 to 125 cm
- Soil- Mixed Red and Black
- Minerals- Felspar, Talcum Stone, Lime stone,Marble,Iron
- Forest- Tropical Dry deciduouse (उष्ण कटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन)
- Second Largest Forest Circle of MP

EDUCATION

Hitkarini Sabha

- **Hitkarini Sabha** is a historic, educational, non-profit organization located in the city of Jabalpur, Madhya Pradesh

  हितकारिणी सभा मध्य प्रदेश के जबलपुर शहर में स्थित एक ऐतिहासिक, शैक्षिक, गैर-लाभकारी संगठन है

- It was founded in 1868 by Raj Balwant Rao Kher, Diwan Biharilal Khajanchi and Shri Ambika Charan Banerjee

  इसकी स्थापना 1868 में राज बलवंत राव खेर, दीवान बिहारीलाल खजांची और श्री अंबिका चरण बनर्जी द्वारा की गई थी।

- The students at Hitkarini Sabha institutions participated in the swaraj movement. हितकारिणी सभा संस्थानों के छात्रों ने स्वराज आंदोलन में भाग लिया।

- Hitkarini Sabha has played a significant role in development of Hindi language

EDUCATION

Robertson College Jabalpur

- **Robertson College** (now divided into Govt. Model Science College and Mahakoshal Arts & Commerce College) is considered to be the oldest such institution in Madhya Pradesh.

  रॉबर्टसन कॉलेज (जिसे अब गवर्नमेंट मॉडल कॉलेज और महाकोशल आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज में विभाजित किया गया है) को मध्य प्रदेश का सबसे पुराना संस्थान माना जाता है।

- It established in 1836 as Sagar Govt. School in Sagar, and was upgraded to Sagar Collegiate School in 1860 by starting F.A. (Fine Art, a degree equivalent to 12th grade) classes

  यह 1836 में सागर सरकार के रूप में स्थापित हुआ। सागर में स्कूल, और एफए (फाइन आर्ट, 12 वीं कक्षा के बराबर की डिग्री) कक्षाओं को शुरू करके 1860 में सागर कॉलेजिएट स्कूल में अपग्रेड किया गया था।

- The institution was moved to Jabalpur in 1873
- It was renamed Robertson College in honor of the then commissioner Mr. Benjamin Robertson

EDUCATION

Jabalpur Engineering College

- Established in 1947
- MP's First and India's 15th Oldest Engineering College
- It is also the first institute of India to have started Electronics & Telecommunications engineering education in the country and the last educational institution set up by the British in India

EDUCATION

Indian Institute of Information Technology, Design and Manufacturing

- Pandit Dwarka Prasad Mishra Indian Institute of Information Technology, Design and Manufacturing is an Indian Institute of Information Technology that focuses on Information Technology enabled Design and Manufacturing

  पंडित द्वारका प्रसाद मिश्रा भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, डिज़ाइन और विनिर्माण एक भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान है जो सूचना प्रौद्योगिकी सक्षम डिज़ाइन और विनिर्माण पर ध्यान केंद्रित करता है।

- It was declared to be Institute of National Importance by Government of India under IIIT Act.

  यह IIIT अधिनियम के तहत भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया गया था।

EDUCATION

Jawaharlal Nehru Krishi Vishwa Vidyalaya

- Establihshed on the Recommendation of Radhakrishnan Commission (1949)
- Establihsed in year 1964
- First medical University of Madhya Pradesh
- JNKVV has produced competent human resource for managing the activities of agriculture and allied sectors and also played a pivotal role in the growth and development of agriculture in the State; need based research and its rapid dissemination in the past have led to several improved technologies,

EDUCATION

Madhya Pradesh Medical Science University (Madhya Pradesh Ayurvigyan Vishwavidyalaya)

- State University established in the year 2011
- jurisdiction over all medical, dental, nursing, paramedical, Ayurveda, homeopathic, Unani, and Yoga colleges in Madhya Pradesh

EDUCATION

Nanaji Deshmukh Veterinary Science University

- Madhya Pradesh Pashu-Chikitsa Vigyan Vishwavidyalaya is a state agricultural university located at Jabalpur
- It was established in 2009 by the Madhya Pradesh Pashu Chikitsa Vigyan Vishwavidyalaya Adhiniyam, 2009 of the Government of Madhya Pradesh
- इसे मध्य प्रदेश सरकार द्वारा 2009 में मध्य प्रदेश पशू चिक्त्स विज्ञान विज्ञान विद्यालय, 2009 द्वारा स्थापित किया गया था
- It imparts education in different branches of veterinary science and fisheries management
  यह पशु चिकित्सा विज्ञान और मत्स्य प्रबंधन की विभिन्न शाखाओं में शिक्षा प्रदान करता है
- The university has three constituent veterinary colleges in Jabalpur, Mhow and Rewa

EDUCATION

Rani Durgavati Vishwavidyalaya

- The university was constituted and established on 12 June 1956 under the Jabalpur University Act, 1956
- The university was renamed Rani Durgavati Vishwavidyalaya on 7 June 1983
- Subhadra Kumari Chauhan Srijan Peeth located

NEWS PAPER & MAGAZINE

Year	News Paper/Magezine	Editor
1873	Jabalpur Samachar	Krishna Rao
1883	Shubh Chintak(Weekly)	Ramgulam Awasthi
1920	Karm veer	Makhanlal Chaturvedi
1956	Vasudha (M)	Harishankar Parsai
1973	Pahal (M)	Gyan Ranjan
	Pradeep (First Evening)	Mohan Sinha

SPORTS ACADEMY

MP Table Tennis Association-1957- Head Quarter

MP Badminton Association- 1946- Head Quarter